CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/2/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. जो नहीं हो सके पूर्ण-काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम
कुछ कुंठित औ' कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट
जिनके अभिमंत्रित तीर हुए;
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए !
– उनको प्रणाम !
जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि-पार;
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार !
– उनको प्रणाम !
जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह नव-नव उत्साह भरे;
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे !
– उनको प्रणाम !
एकाकी और अकिंचन हो
जो भू-परिक्रमा को निकले;
हो गए पंगु, प्रति-पद जिनके
इतने अदृष्ट के दाव चले !
– उनको प्रणाम !
कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए;
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल
– उनको प्रणाम ! [8 अंक]

1(i). 'रिक्त तूणीर' होने का अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) अनुभवहीन
(B) विफल
(C) कुंठित
(D) साधनहीन

सही उत्तर: (D) साधनहीन

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में प्रयुक्त शब्द का अर्थ उसके संदर्भ से निश्चित होता है।
- तूणीर तीर रखने का पात्र है; उसका रिक्त होना युद्ध के साधनों के समाप्त होने का संकेत है।

चरण 1: शाब्दिक अर्थ पहचानें 'रण की समाप्ति के पहले ही' वीरों के 'रिक्त तूणीर' होने का उल्लेख है। तूणीर में तीर रखे जाते हैं। उसके खाली होने का अर्थ है कि संघर्ष जारी रहते हुए ही उनके तीर समाप्त हो गए।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें इसलिए यहाँ साधनों के अभाव का भाव प्रधान है। अनुभवहीन होने का कोई संकेत नहीं है। विफलता संघर्ष का परिणाम हो सकती है, पर वह रिक्त तूणीर का सीधा अर्थ नहीं है। कुंठित होना मन की स्थिति है, जबकि यहाँ साधन चुक जाने की स्थिति व्यक्त हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः 'रिक्त तूणीर' का अभिप्राय साधनहीन होना है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: तूणीर का अर्थ पहले पहचानें, फिर खाली पात्र से साधन समाप्त होने का भाव जोड़ें।

1(ii). काव्यांश में 'हिम समाधि' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है ? [1 अंक]

(A) बर्फीले प्रदेश के कष्टों को झेलना

(B) बर्फ के नीचे दबकर मर जाना

(C) बर्फ जैसी श्वेत समाधि बनाना

(D) बर्फ का ऊँचा शिखर चढ़ना

सही उत्तर: (B) बर्फ के नीचे दबकर मर जाना

हल:

अवधारणा:

- शब्द का संदर्भगत अर्थ आसपास की पंक्तियों से ग्रहण करना चाहिए।
- हिम-समाधि में हिम का अर्थ बर्फ और समाधि का आशय यहाँ मृत्यु है।

चरण 1: प्रसंग देखें कवि उन लोगों का वर्णन करता है जो उत्साह से ऊँचे शिखर की ओर बढ़े। उनमें से कुछ ने हिम-समाधि ले ली और कुछ असफल होकर नीचे लौट आए। दोनों परिणामों को अलग बताया गया है।

चरण 2: विकल्पों का भेद समझें हिम-समाधि लेना बर्फ के नीचे दबकर मर जाना है। केवल बर्फीले प्रदेश के कष्ट सहना मृत्यु का भाव व्यक्त नहीं करता। बर्फ जैसी श्वेत समाधि बनाना यहाँ कोई निर्माण-कार्य नहीं है। शिखर पर चढ़ना उनका प्रयास था, जबकि हिम-समाधि उस प्रयास में हुई मृत्यु को बताती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः 'हिम समाधि' का अर्थ बर्फ के नीचे दबकर मर जाना है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: शिखर चढ़ने के प्रयास और हिम-समाधि के परिणाम को अलग करके विकल्प चुनें।

1(iii). 'छोटी-सी नैया' और 'उदधि-पार' का प्रतीकार्थ है – [1 अंक]

(A) छोटी नाव, विशाल सागर

(B) सीमित साधन, विशाल लक्ष्य

(C) कम मेहनत, अधिक सफलता

(D) छोटी नौका, बड़ा जहाज

सही उत्तर: (B) सीमित साधन, विशाल लक्ष्य

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक में किसी ठोस वस्तु के माध्यम से व्यापक भाव व्यक्त होता है।
- नैया का छोटापन साधनों की सीमा और समुद्र पार करना लक्ष्य की विशालता बताता है।

चरण 1: दोनों प्रतीक जोड़ें कवि कहता है कि कुछ लोग छोटी-सी नैया लेकर समुद्र पार करने निकले। छोटी नैया यात्रा की कठिनाई के सामने उपलब्ध साधनों की अल्पता दर्शाती है। उदधि पार करने का संकल्प अत्यंत बड़े लक्ष्य का बोध कराता है।

चरण 2: अन्य विकल्प हटाएँ छोटी नाव और विशाल सागर कहना केवल शाब्दिक अर्थ बताता है, प्रतीकार्थ नहीं। कम मेहनत और अधिक सफलता का भाव नहीं है, क्योंकि कविता कठिन संघर्ष और अपूर्ण आकांक्षा का वर्णन करती है। बड़े जहाज का कोई उल्लेख भी नहीं है। इसलिए दोनों प्रतीकों का सही मेल सीमित साधन और विशाल लक्ष्य है।

चरण 3: निष्कर्ष सही प्रतीकार्थ सीमित साधन और विशाल लक्ष्य है। अतः विकल्प (B) सही है।

त्वरित सुझाव: प्रतीकार्थ पूछे जाने पर वस्तुओं के नाम दोहराने के बजाय उनका व्यापक भाव पहचानें।

1(iv). कवि किन लोगों को प्रणाम कर रहा है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि की श्रद्धा का पात्र पहचानने के लिए बार-बार आए प्रणाम के संदर्भ देखें।
- कविता में सफलता से अधिक संघर्ष, साहस और त्याग के प्रति सम्मान है।

चरण 1: काव्यांश का आधार पहचानें आरंभ की पंक्ति 'जो नहीं हो सके पूर्ण-काम' बताती है कि कवि उन लोगों को स्मरण करता है जिनके लक्ष्य पूरे नहीं हुए। आगे साधन खो देने वाले वीरों, समुद्र पार करने निकले लोगों और शिखर की ओर बढ़ने वालों का वर्णन है।

चरण 2: उत्तर निर्धारित करें इन सबमें समान बात है कि उन्होंने कठिन परिस्थितियों में साहसपूर्ण प्रयास किया, पर लक्ष्य पाने से पहले असफल हुए, अपंग हुए अथवा प्राण गँवा बैठे। कवि उन बलिदानियों को भी सम्मान देता है जिन्हें संसार भूल गया। उसका प्रणाम इनके संघर्ष और त्याग के प्रति है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि उन साहसी संघर्षशील और त्यागी लोगों को प्रणाम कर रहा है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रयास करते हुए भी लक्ष्य पूरा न कर सके या प्राण गँवा बैठे।

त्वरित सुझाव: हर अंतरे के उदाहरणों में साझा बात खोजें; वही कवि के प्रणाम का आधार है।

1(v). 'हो गए उसी में निराकार' कथन का क्या तात्पर्य है ? काव्यांश के आधार पर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ लिखते समय कथन को उससे पहले और बाद की पंक्तियों से जोड़ना चाहिए।
- निराकार होना यहाँ समुद्र में समाकर अपना भौतिक अस्तित्व खो देने का संकेत है।

चरण 1: कथन का प्रसंग स्पष्ट करें कुछ लोग छोटी-सी नैया लेकर विशाल समुद्र पार करने के उद्देश्य से निकले। 'मन की मन में ही रही' से स्पष्ट है कि उनकी आकांक्षा पूरी नहीं हुई। 'उसी में' का संबंध उदधि अर्थात समुद्र से है। इसलिए निराकार होने को इसी समुद्र-यात्रा के संदर्भ में समझना होगा।

चरण 2: अर्थ और भाव समझाएँ वे समुद्र पार करने से पहले उसी में डूब गए और अपना जीवन खो बैठे। उनका दृश्य, साकार शरीर समुद्र में विलीन हो गया, इसलिए कवि ने उन्हें निराकार कहा है। यह इच्छाओं की पूर्ति या समुद्र पार कर लेने का संकेत नहीं है। यहाँ उनके अधूरे स्वप्न और दुखद अंत का भाव है। छोटी नैया तथा विशाल समुद्र का विरोध उनके सीमित साधनों और कठिन लक्ष्य को भी उभारता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का तात्पर्य है कि समुद्र पार करने निकले लोग उसमें डूबकर प्राण गँवा बैठे। उनकी इच्छा अधूरी रह गई और

उनका अस्तित्व उसी समुद्र में विलीन हो गया।

त्वरित सुझाव: 'उसी में' किस पूर्ववर्ती शब्द की ओर संकेत करता है, यह पहचानकर भावार्थ लिखें।

1(vi). कवि के अनुसार प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष करने के बाद भी दुनिया उन लोगों को क्यों भूल गई ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में संसार के विस्मरण और कवि के सम्मान के बीच अंतर दिखाया गया है।
- उत्तर का आधार लक्ष्य पूरा न कर पाने और शीघ्र भुला दिए जाने वाली पंक्तियाँ हैं।

चरण 1: सफलता और स्मृति का संबंध देखें कवि कहता है कि ये लोग 'कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए' और उनमें कुछ फाँसी पर भी चढ़ गए। इससे पता चलता है कि वे अपने उद्देश्य की पूर्ण सिद्धि नहीं देख सके। कठिन संघर्ष और बलिदान के बावजूद उन्हें सफलता का यश नहीं मिला।

चरण 2: दुनिया के दृष्टिकोण की व्याख्या करें काव्यांश से यह भाव निकलता है कि संसार प्राय: दिखाई देने वाली सफलता और उपलब्धि को याद रखता है। अधूरे रह गए प्रयत्नों के पीछे का साहस, पीड़ा और त्याग उसकी स्मृति में उतना स्थान नहीं पाते। इसलिए थोड़े ही समय में उन लोगों का विस्मरण हो गया। कवि बार-बार उन्हें प्रणाम करके इसी उपेक्षा के विरुद्ध अपना सम्मान प्रकट करता है। वह दिखाता है कि लक्ष्य की प्राप्ति न होना उनके संघर्ष और बलिदान का महत्त्व कम नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष दुनिया ने उन्हें इसलिए भुला दिया कि वह प्राय: सफल उपलब्धियों को महत्त्व देती है; लक्ष्य पूरा न कर सके लोगों के संघर्ष और बलिदान की उपेक्षा करती है। कवि उन्हें प्रणाम कर इस विस्मरण का प्रतिकार करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दुनिया का सफलता-केंद्रित दृष्टिकोण और कवि का संघर्ष के प्रति सम्मान, दोनों जोड़ें।

2. लेखक और प्रकाशक एक-दूसरे के पूरक होते हैं। यदि प्रकाशक नहीं हों, तो लेखकों की कृतियों को लोक-लोचन के सम्मुख प्रस्तुत कौन करेगा और यदि लेखक नहीं हों, तो प्रकाशन के व्यवसाय की शुरुआत कैसे हो, प्रकाशक का जन्म ही कहाँ से हो ?

यह सत्य है कि मूल लेखक है और प्रकाशक उसका तना है, लेकिन तने के विस्तार को सब लोग देखते हैं और मूल की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। वह तो अधिकतर भूमिष्ठ ही रहता है। प्रकाशक की अट्टालिका, मोटर, शानशौकत अब सभी प्रमुख नगरों में हम देख सकते हैं। पर बेचारे लेखक को हम ढूँढने से ही पा सकते हैं।

इस स्वाभाविक स्थिति की विषमता लेखक और प्रकाशक के पारस्परिक सम्बन्धों में तनाव पैदा करती है। मूल और तने के बीच का तनाव कभी सुफल नहीं ला सकता। इस विषम स्थिति से निकलने के लिए दोनों को यह सोचना होगा कि सामंजस्य कैसे स्थापित हो ?

सोचना इसलिए भी जरूरी है कि कुछ लोग इस तनाव को बढ़ाने की ही दिशा में काम करते नज़र आ रहे हैं। वे लेखक से कहते हैं, देखो, तुम्हारा कितना शोषण हो रहा है, ये प्रकाशक जोंक हैं जोंक। इनसे बचो। और प्रकाशक से कहा जाता है, अजी साहब, इस लेखक को जानता कौन था ? यह तो आप हैं, जिसने इसे आसमान पर चढ़ाया !

तनाव बढ़ता जा रहा है। दोनों की हानि हो रही है। यह तनाव दोनों को चौपट कर सकता है। अत: इस पर चिंतन करना अनिवार्य है।

[10 अंक]

2(i). लेखक और प्रकाशक के बीच परस्पर कैसा संबंध है ? [1 अंक]

(A) फूल और पत्ते जैसा

(B) मूल और तने जैसा

(C) फल और शाखा जैसा

(D) कली और फूल जैसा

सही उत्तर: (B) मूल और तने जैसा

हल:

अवधारणा:

- उपमा को समझने के लिए गद्यांश में लेखक और प्रकाशक के लिए प्रयुक्त शब्दों को पहचानना आवश्यक है।
- मूल रचना का आधार है और तना उसके विस्तार का माध्यम है; दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

चरण 1: प्रत्यक्ष प्रमाण पहचानें गद्यांश स्पष्ट कहता है कि मूल लेखक है और प्रकाशक उसका तना है। लेखक कृति रचता है और प्रकाशक उसे पाठकों तक पहुँचाता है। अतः संबंध की पहचान इसी रूपक से होती है।

चरण 2: अन्य विकल्प परखें फूल-पत्ते, फल-शाखा तथा कली-फूल के संबंध का उल्लेख गद्यांश में नहीं है। ये विकल्प मूल और तने के उस संबंध को व्यक्त नहीं करते जिसे लेखक ने स्वयं चुना है। इसलिए (A), (C) और (D) अनुपयुक्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक और प्रकाशक का संबंध मूल और तने जैसा है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: रूपक आधारित प्रश्न में सामान्य अनुमान के स्थान पर गद्यांश में प्रयुक्त मूल शब्द खोजें।

2(ii). प्रस्तुत गद्यांश में लेखक और प्रकाशक के बीच किस प्रकार का संबंध बताया गया है ? [1 अंक]

(A) परस्पर सहयोग का

(B) पारस्परिक प्रतिस्पर्धा का

(C) पारस्परिक प्रेम का

(D) पारस्परिक तनाव का

सही उत्तर: (D) पारस्परिक तनाव का

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का केंद्रीय प्रसंग लेखक और प्रकाशक के संबंधों में उत्पन्न विषमता और तनाव है।
- आदर्श संबंध और वर्तमान स्थिति में भेद करके सबसे उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 1: मुख्य प्रसंग पहचानें आरंभ में दोनों को पूरक कहा गया है, किंतु आगे उनकी विषम स्थिति से पैदा होने वाले तनाव का वर्णन है। अंतिम अनुच्छेद में भी तनाव बढ़ने और दोनों की हानि होने की बात कही गई है।

चरण 2: विकल्पों का अंतर समझें परस्पर सहयोग अपेक्षित आदर्श है, पर गद्यांश की वर्णित समस्या तनाव है। प्रतिस्पर्धा को संबंध का नाम नहीं दिया गया है और पारस्परिक प्रेम का भी उल्लेख नहीं है। इसलिए (A), (B) और (C) मुख्य प्रसंग के अनुरूप नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश में दोनों के बीच पारस्परिक तनाव का संबंध बताया गया है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: आरंभिक वाक्य के साथ पूरे अनुच्छेद और अंतिम निष्कर्ष को जोड़कर केंद्रीय प्रसंग पहचानें।

2(iii). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : प्रकाशक की स्थिति लेखक से अधिक स्पष्ट है।

कारण : लेखक को ढूँढना कठिन है जबकि प्रकाशक की भौतिक समृद्धि आसानी से दिखती है। [1 अंक]

(A) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(C) कथन सही है, कारण गलत है।

(D) कथन गलत है, कारण सही है।

सही उत्तर: (A) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग परखी जाती है।
- कारण सही व्याख्या तभी करता है जब वह कथन में कही गई स्थिति का आधार स्पष्ट करे।

चरण 1: कथन की सत्यता प्रकाशक की अट्टालिका, मोटर और शानशौकत प्रमुख नगरों में दिखाई देती है। इसलिए उसकी स्थिति अधिक स्पष्ट अर्थात आसानी से दिखाई देने वाली बताई गई है। कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता गद्यांश में कहा गया है कि लेखक को ढूँढने से ही पाया जा सकता है, जबकि प्रकाशक की भौतिक समृद्धि सामने दिखती है। यह कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध लेखक की अलक्षित अवस्था और प्रकाशक की दिखाई देने वाली समृद्धि ही प्रकाशक की स्थिति अधिक स्पष्ट होने का आधार हैं। अत: कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (B) यह संबंध नकारता है; (C) और (D) एक सही अंश को गलत बताते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों वाक्यों की सत्यता जाँचें, फिर देखें कि कारण कथन के पीछे का आधार बताता है या नहीं।

2(iv). गद्यांश के अनुसार 'वह तो अधिकतर भूमिष्ठ ही रहता है' – कौन भूमिष्ठ रहता है और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सर्वनाम का आशय उसके पहले आए प्रसंग तथा मूल-तने के रूपक से स्पष्ट होता है।
- भूमिष्ठ का शाब्दिक अर्थ भूमि के भीतर स्थित होना है; यहाँ यह लेखक के अलक्षित रहने का संकेत है।

चरण 1: संदर्भ पहचानें यहाँ मूल के रूप में चित्रित लेखक भूमिष्ठ रहता है। जैसे वृक्ष की जड़ धरती के भीतर होने से दिखाई नहीं देती, वैसे ही रचना का मूल आधार लेखक सामान्यत: लोगों की निगाह में नहीं आता।

चरण 2: कारण स्पष्ट करें लोग तने अर्थात प्रकाशक के विस्तार और उसकी अट्टालिका, मोटर तथा शानशौकत को देखते हैं। उनका ध्यान मूल अर्थात लेखक की ओर नहीं जाता; उसे ढूँढने पर ही पाया जाता है। इसलिए उसके लिए भूमिष्ठ शब्द प्रयुक्त हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक रूपी मूल भूमिष्ठ रहता है, क्योंकि उसके सृजनात्मक योगदान की ओर लोगों का ध्यान नहीं जाता और प्रकाशक का दिखाई देने वाला विस्तार ही सबको आकर्षित करता है।

त्वरित सुझाव: भूमिष्ठ को लेखक के सचमुच भूमि में रहने का कथन न मानें; मूल-तने के रूपक से अर्थ निकालें।

2(v). लेखक और प्रकाशक दोनों कैसे एक-दूसरे के पूरक हैं ? किन्हीं दो तर्कों द्वारा पुष्टि कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पूरक होने का अर्थ है कि दोनों अपनी अलग भूमिका निभाकर एक-दूसरे के कार्य को पूरा करते हैं।
- उत्तर के दोनों तर्क गद्यांश के आरंभ में उठाए गए प्रश्नों से प्राप्त होते हैं।

चरण 1: लेखक की भूमिका लेखक कृति की रचना करता है। उसकी रचना ही प्रकाशन व्यवसाय का मूल आधार है। यदि लेखक और उसकी कृतियाँ न हों तो प्रकाशक के व्यवसाय की शुरुआत नहीं हो सकती। इसलिए प्रकाशक अपने काम के लिए लेखक पर निर्भर है। यह गद्यांश के इस प्रश्न से पुष्ट होता है कि लेखक के बिना प्रकाशक का जन्म ही कहाँ से हो।

चरण 2: प्रकाशक की भूमिका प्रकाशक लेखक की कृतियों को लोक-लोचन अर्थात जनता और पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। उसके माध्यम से रचना लोगों तक पहुँचती है। यदि प्रकाशक न हो तो लेखक की कृतियों को सामने लाने का कार्य अधूरा रह जाएगा। इसीलिए गद्यांश लेखक को मूल और प्रकाशक को तना कहकर दोनों की परस्पर आवश्यकता स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पहला तर्क यह है कि लेखक की रचनाएँ प्रकाशक के व्यवसाय का आधार हैं। दूसरा तर्क यह है कि प्रकाशक उन रचनाओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

त्वरित सुझाव: दो तर्क देते समय एक में लेखक की और दूसरे में प्रकाशक की उपयोगिता स्पष्ट करें।

2(vi). लेखक और प्रकाशक के बीच संबंधों में सुधार किस प्रकार आ सकता है ? किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सुधार का आधार गद्यांश में सुझाया गया सामंजस्य और परस्पर हितों पर चिंतन है।
- दोनों को पूरक संबंध समझना और तनाव बढ़ाने वाली बातों से बचना आवश्यक है।

चरण 1: परस्पर महत्व स्वीकार करें लेखक और प्रकाशक दोनों को समझना चाहिए कि रचना और उसका प्रकाशन एक-दूसरे पर निर्भर हैं। लेखक प्रकाशन व्यवसाय का मूल आधार है और प्रकाशक रचना को लोगों के सामने लाता है। इसलिए दोनों को एक-दूसरे के योगदान को महत्व देकर यह विचार करना चाहिए कि विषम स्थिति में भी सामंजस्य कैसे स्थापित किया जाए।

चरण 2: भड़काने वालों से सावधान रहें कुछ लोग लेखक से प्रकाशक को शोषक कहते हैं और प्रकाशक से लेखक की पहचान का सारा श्रेय उसे लेने को कहते हैं। दोनों को ऐसी बातों से प्रभावित होकर तनाव बढ़ाने के स्थान पर आपसी संबंधों पर विचार करना चाहिए। गद्यांश के अनुसार बढ़ता तनाव दोनों की हानि कर रहा है; इस साझा हानि को समझना सुधार की दिशा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष संबंधों में सुधार के लिए दोनों एक-दूसरे की पूरक भूमिका स्वीकार करके सामंजस्य स्थापित करें तथा तनाव बढ़ाने वालों की बातों में आने के बजाय पारस्परिक हितों पर चिंतन करें।

त्वरित सुझाव: सुधार के दो बिंदु लिखते समय एक सकारात्मक उपाय और एक तनाव बढ़ाने वाले व्यवहार से बचाव बताएं।

2(vii). लेखक और प्रकाशक के संबंधों में दूरी बढ़ने के क्या कारण हैं ? इस दूरी के बढ़ने से क्या हानि हो रही है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में कारण और परिणाम दोनों पूछे गए हैं; उत्तर में दोनों का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।
- गद्यांश संबंधों की विषमता तथा दूसरों द्वारा भड़काए जाने को तनाव बढ़ने से जोड़ता है।

चरण 1: दूरी बढ़ने के कारण प्रकाशक का वैभव और विस्तार सबको दिखाई देता है, जबकि मूल रचनाकार लेखक प्रायः उपेक्षित रहता है। यही विषम स्थिति संबंधों में तनाव पैदा करती है। साथ ही कुछ लोग लेखक को शोषण की बात कहकर प्रकाशक के विरुद्ध भड़काते हैं और प्रकाशक से कहते हैं कि लेखक की प्रतिष्ठा उसी की देन है। ये बातें दूरी को और बढ़ाती हैं।

चरण 2: दूरी बढ़ने की हानि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, इसलिए उनके बीच तनाव किसी के हित में नहीं है। गद्यांश स्पष्ट कहता है कि दोनों की हानि हो रही है और बढ़ता तनाव दोनों को चौपट कर सकता है। मूल और तने का तनाव सुफल नहीं ला सकता; अतः रचना और प्रकाशन से जुड़ा उनका साझा हित संकट में पड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष भौतिक स्थिति की विषमता, लेखक की उपेक्षा और लोगों की भड़काने वाली बातों से दूरी बढ़ती है। इसके कारण दोनों को हानि पहुँच रही है तथा उनका परस्पर निर्भर काम चौपट होने का खतरा है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले दूरी के कारण लिखें और फिर दोनों की हानि का परिणाम बताकर प्रश्न के दोनों हिस्से पूरे करें।

3(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

अखबार या पत्रिका के प्रकाशन के संदर्भ में 'डेडलाइन' से क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डेडलाइन प्रकाशन के लिए सामग्री पहुँचाने की अंतिम निर्धारित समय-सीमा है।
- समाचार-संकलन, संपादन, पृष्ठ-सज्जा और मुद्रण समयबद्ध कार्य हैं।

चरण 1: प्रकाशन-प्रक्रिया को समझें अखबार या पत्रिका की सामग्री पहले संकलित होती है, फिर उसका चयन, संपादन और पृष्ठ-सज्जा की जाती है। इसके बाद मुद्रण तथा वितरण होता है। प्रत्येक चरण अगले चरण से जुड़ा है; इसलिए सामग्री जमा करने के लिए समय निर्धारित करना आवश्यक होता है। अंतिम सीमा बीतने पर प्राप्त सामग्री को निर्धारित अंक में शामिल करना कठिन हो सकता है। इसलिए यह समय-सीमा केवल रिपोर्टर के लिए नहीं, पूरी प्रकाशन-प्रक्रिया के समन्वय के लिए महत्त्वपूर्ण है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर अखबार या पत्रिका के प्रकाशन हेतु समाचार, लेख तथा अन्य सामग्री जमा करने की अंतिम निर्धारित समय-सीमा को डेडलाइन कहते हैं। इसके भीतर सामग्री मिलने पर संपादन, पृष्ठ-सज्जा, मुद्रण और वितरण के काम समय से पूरे हो पाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष डेडलाइन सामग्री देने की अंतिम समय-सीमा है, जिससे प्रकाशन समय पर हो सके।

त्वरित सुझाव: डेडलाइन का अर्थ बताते समय अंतिम समय-सीमा और समय पर प्रकाशन, दोनों बातें अवश्य लिखें।

3(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

ड्राई एंकर किसे कहते हैं ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में एंकर का वाचन और समाचार के दृश्य अलग-अलग प्रस्तुति-तत्त्व हैं।
- ड्राई एंकर में खबर से संबंधित दृश्य अथवा रिपोर्टर की बाइट के बिना एंकर खबर पढ़ता है।

चरण 1: प्रस्तुति की विशेषता पहचानें सामान्य टेलीविजन समाचार में घटनास्थल के दृश्य, संबंधित व्यक्तियों के कथन या संवाददाता की रिपोर्ट शामिल हो सकती है। ड्राई एंकर में इनका सहारा नहीं लिया जाता। दर्शक को समाचार एंकर के सीधे वाचन से मिलता है; इसलिए केवल एंकर का दिखाई देना समाचार के दृश्य होने के समान नहीं है। इस रूप में खबर के शब्द और एंकर की स्पष्ट भाषा विशेष

महत्त्व रखते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर टेलीविजन पर समाचार प्रस्तुत करने का वह तरीका ड्राई एंकर कहलाता है, जिसमें एंकर खबर से संबंधित दृश्य, बाइट या संवाददाता की रिपोर्ट के बिना सीधे समाचार पढ़ता है। इसमें दर्शकों को खबर की जानकारी मुख्यतः एंकर के वाचन से मिलती है।

चरण 3: निष्कर्ष संबंधित दृश्य या बाइट के बिना एंकर द्वारा सीधे खबर पढ़ना ड्राई एंकर है।

त्वरित सुझाव: ड्राई एंकर में एंकर दिखाई दे सकता है; अनुपस्थित चीज खबर से संबंधित दृश्य सामग्री है।

3(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'हिन्दी वेब पत्रकारिता अभी शैशवकाल में है' – कैसे ? उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वेब पत्रकारिता में सामग्री की मौलिकता, नियमित अद्यतन और तकनीकी सुगमता आवश्यक हैं।
- प्रश्न के पाठ्यपुस्तकीय संदर्भ में शैशवकाल का आशय हिन्दी वेब पत्रकारिता के आरंभिक विकास से है।

चरण 1: कथन के कारण स्पष्ट करें इस कथन में हिन्दी वेब पत्रकारिता की विकसित पत्रकारिताई माध्यमों से तुलना की गई है। आरंभिक दौर में कई वेबसाइटें मुद्रित अखबारों की सामग्री ही प्रस्तुत करती थीं। स्वतंत्र मौलिक सामग्री, नियमित अद्यतन और मानकीकृत तकनीकी सुविधाओं की कमी से वेब की संभावनाओं का पूरा उपयोग नहीं हो पाता था।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर हिन्दी वेब पत्रकारिता में स्वतंत्र और मौलिक सामग्री का अभाव रहा है। अधिकांश वेबसाइटें मुद्रित अखबारों की सामग्री प्रस्तुत करती थीं। नियमित अद्यतन की कमी तथा फॉन्ट, वर्तनी और तकनीकी एकरूपता की समस्याओं के कारण इसका विकास आरंभिक अवस्था में माना गया।

चरण 3: निष्कर्ष मौलिक सामग्री की कमी और तकनीकी बाधाएँ हिन्दी वेब पत्रकारिता के आरंभिक विकास की सीमाएँ थीं।

त्वरित सुझाव: उत्तर पाठ्यपुस्तक के संदर्भ में लिखें और सामग्री तथा तकनीक, दोनों से जुड़ी सीमाएँ बताएँ।

3(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
अखबार की अपनी आवाज़ किसे कहा जाता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय समसामयिक विषय पर अखबार की संस्थागत राय प्रस्तुत करता है।
- समाचार में तथ्य प्रधान होते हैं, जबकि संपादकीय में उनका विश्लेषण और अखबार का दृष्टिकोण प्रमुख होता है।

चरण 1: आवाज का आशय समझें यहाँ आवाज का अर्थ अखबार की विचारगत पहचान और दृष्टिकोण है। किसी लेखक के व्यक्तिगत लेख या पाठक के पत्र से पूरे अखबार की राय निर्धारित नहीं होती। संपादकीय में किसी महत्त्वपूर्ण घटना, नीति या समस्या का मूल्यांकन करके अखबार का आधिकारिक मत सामने रखा जाता है। इसीलिए संपादकीय की पहचान उसके संस्थागत विचार से होती है, किसी एक लेखक की निजी राय से नहीं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर संपादकीय को अखबार की अपनी आवाज कहा जाता है। इसमें किसी समसामयिक घटना, समस्या या नीति पर अखबार का आधिकारिक दृष्टिकोण और विचार प्रकट होते हैं। यह तथ्यों के विश्लेषण के साथ अखबार की वैचारिक दिशा तथा पक्ष को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अखबार का संस्थागत मत व्यक्त करने के कारण संपादकीय उसकी अपनी आवाज कहलाता है।

त्वरित सुझाव: संपादकीय को व्यक्तिगत लेख से अलग पहचानें और उत्तर में अखबार के आधिकारिक दृष्टिकोण का उल्लेख करें।

3(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'पत्रकारिता क्षेत्र में विशेषज्ञता' से क्या अभिप्राय है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषज्ञता किसी विशेष क्षेत्र का गहरा ज्ञान और उसमें तथ्यपरक विश्लेषण की क्षमता है।
- विशेषीकृत पत्रकारिता में विषय की पृष्ठभूमि, शब्दावली और घटनाओं के प्रभाव समझना आवश्यक है।

चरण 1: विशेषज्ञता का स्वरूप समझें पत्रकारिता में विज्ञान, अर्थव्यवस्था, खेल, कृषि और राजनीति जैसे अनेक क्षेत्र होते हैं। किसी एक क्षेत्र की लगातार रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकार को उसके तथ्य, प्रक्रियाएँ, शब्दावली और प्रमुख संस्थाएँ जाननी होती हैं। केवल सूचना देना पर्याप्त नहीं; उसका सही अर्थ और प्रभाव समझाना भी विशेषज्ञता का अंग है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पत्रकारिता में विशेषज्ञता का अभिप्राय किसी विशेष क्षेत्र, जैसे अर्थव्यवस्था, विज्ञान, खेल या राजनीति का गहरा ज्ञान प्राप्त करना है। विशेषज्ञ पत्रकार विषय की पृष्ठभूमि और शब्दावली समझकर तथ्यों की जाँच करता है तथा घटनाओं के कारणों और प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी विषय का गहरा ज्ञान लेकर प्रमाणिक रिपोर्टिंग और विश्लेषण करना पत्रकारिताई विशेषज्ञता है।

त्वरित सुझाव: विशेषज्ञता की परिभाषा के साथ एक क्षेत्र और गहन विश्लेषण की भूमिका जोड़ने से उत्तर स्पष्ट होगा।

4(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
वर्तमान जीवन शैली और स्वास्थ्य [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में दिए गए विषय के विचारों को निजी अनुभूति और प्रभावी भाषा से जोड़ा जाता है। यहाँ जीवन शैली के स्वास्थ्य पर प्रभाव और सुधार के व्यावहारिक उपाय केंद्र में रहेंगे।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में आकर्षक आरंभ, परस्पर जुड़े विचार और सार्थक समापन आवश्यक हैं। शीर्षक विषय के अनुरूप हो तथा भाषा सरल, मौलिक और प्रवाहपूर्ण रहे।

चरण 1: विषय का केंद्र और विचारों का क्रम पहले आधुनिक दिनचर्या का चित्र सामने रखें। फिर लगातार बैठने, अनियमित भोजन, मोबाइल के अधिक प्रयोग और कम नींद को स्वास्थ्य की समस्या से जोड़ें। अंत में संतुलित भोजन, नियमित व्यायाम और पर्याप्त विश्राम जैसे सरल उपाय दें। विषय जीवन शैली और स्वास्थ्य के संबंध का है, इसलिए केवल रोगों की सूची या केवल योग की प्रशंसा तक सीमित न रहें।

चरण 2: प्रस्तुति और शब्द सीमा लेख को उपयुक्त शीर्षक दें। आरंभ में जीवन की गति और स्वास्थ्य के बीच संबंध स्पष्ट हो, बीच में कारण तथा उपाय आएँ और अंत में कोई विचारोत्तेजक बात हो। इसे पत्र की तरह संबोधन और हस्ताक्षर देकर न लिखें। नीचे दिए गए आदर्श लेख का मुख्य पाठ लगभग 120 शब्दों में है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख **वर्तमान जीवन शैली और स्वास्थ्य**

आज जीवन की रफ्तार तेज है, पर हमारा शरीर लगातार थक रहा है। सुबह आँख खुलते ही मोबाइल और रात तक काम का दबाव हमारी

दिनचर्या बन गए हैं। पैदल चलना घटा है और कुर्सी पर बैठना बढ़ा है। जल्दी में खाया गया असंतुलित भोजन तथा अधूरी नींद स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। चिड़चिड़ापन भी इसी अव्यवस्था का संकेत है।

स्वस्थ रहने के लिए बड़े संकल्पों से अधिक छोटी आदतों की जरूरत है। प्रतिदिन टहलना, समय पर भोजन करना, पर्याप्त पानी पीना और नींद पूरी करना उपयोगी है। परिवार से बातचीत तथा मोबाइल से कुछ दूरी मन को विश्राम देती है। सुविधा तभी सार्थक है, जब वह स्वास्थ्य की कीमत पर न मिले। संतुलित दिनचर्या ही सच्ची संपन्नता है।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख आधुनिक जीवन की समस्याओं और स्वास्थ्य सुधार के उपायों को जोड़ते हुए संतुलित दिनचर्या का संदेश देता है। शीर्षक, सुसंगत विचार और लगभग 120 शब्दों का मुख्य पाठ इसे विषयानुकूल रचना बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले जीवन शैली की दो समस्याएँ चुनें, फिर उनसे जुड़े उपाय लिखें और समापन में स्वास्थ्य का महत्त्व एक प्रभावी वाक्य में व्यक्त करें।

4(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

स्कूल के बाहर स्टेशनरी की दुकान [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृश्य पर आधारित रचनात्मक लेख में स्थान, व्यक्तियों की गतिविधियों और छोटी वस्तुओं के वर्णन से अनुभव को सजीव बनाया जाता है। स्कूल के बाहर की स्टेशनरी की दुकान विद्यार्थी जीवन से जुड़ा परिचित दृश्य है।
- लगभग 120 शब्दों की रचना में एक केंद्रीय अनुभूति बनाए रखें। वस्तुओं की सूची भर देने के बजाय बच्चों, दुकानदार और दुकान के वातावरण को जोड़ते हुए अंत में अपना भाव व्यक्त करें।

चरण 1: दृश्य और सामग्री का चयन स्कूल की छुट्टी या सुबह की चहलपहल को आरंभ का आधार बनाया जा सकता है। पेंसिल, कॉपियाँ, रंग, रबर और चार्ट जैसे विवरण दुकान की पहचान स्पष्ट करेंगे। किसी बच्चे की जल्दी, किसी की पसंद और दुकानदार के सहयोग से दृश्य में गति आएगी। सभी विवरण विद्यार्थी जीवन के छोटे सपनों और आवश्यकताओं से जुड़े रहें।

चरण 2: रचना का क्रम और स्वरूप पहले दुकान का स्थान और रूप दिखाएँ, फिर बच्चों तथा दुकानदार की गतिविधियाँ वर्णित करें। अंत में बताएँ कि वह छोटी दुकान विद्यार्थियों के लिए क्यों विशेष है। लेख में सरल, चित्रात्मक भाषा और छोटे वाक्य उपयोगी रहेंगे। विज्ञापन की तरह कीमतों या छूट की सूची न दें। नीचे दिए गए आदर्श लेख का मुख्य पाठ लगभग 120 शब्दों में है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख **स्कूल के बाहर स्टेशनरी की दुकान**

स्कूल के फाटक के सामने वह छोटी दुकान सुबह से ही जाग उठती है। काँच के पीछे सजी रंगीन पेंसिलें और टँगी हुई कॉपियाँ बच्चों को अपनी ओर खींचती हैं। कोई भूली हुई रबर लेने दौड़ता है, तो कोई परियोजना के लिए चार्ट माँगता है। दुकानदार सबकी जल्दी समझता है और मुसकराते हुए सामान निकालता जाता है।

छुट्टी के समय दुकान के आगे फिर चहलपहल बढ़ जाती है। सिक्कों की खनक, दोस्तों की बातचीत और नए पेन को परखती उत्सुक आँखें दृश्य को जीवंत बना देती हैं। यहाँ केवल कागज और कलम नहीं बिकते, बच्चों के छोटे सपनों को आकार मिलता है। मेरे लिए यह दुकान स्कूल की यादों में खुलती एक रंगीन खिड़की है, जहाँ हर दिन नई शुरुआत होती है।

चरण 4: निष्कर्ष यह रचना दुकान के दृश्य, बच्चों की गतिविधियों और व्यक्तिगत अनुभूति को जोड़ती है। उसका केंद्र स्टेशनरी की दुकान है और समापन उसे विद्यार्थी जीवन की स्मृतियों से जोड़कर प्रभावपूर्ण बनाता है।

त्वरित सुझाव: दृश्यात्मक विषय पर लिखते समय दो दिखाई देने वाली वस्तुएँ, एक सुनाई देने वाली आवाज और एक छोटी गतिविधि चुनें; फिर उन्हें एक अनुभूति से जोड़ दें।

4(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

शिक्षा के क्षेत्र में ए.आई. के बढ़ते चरण [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय की स्पष्ट समझ, मौलिक दृष्टि और सहज भाषा का समन्वय होना चाहिए। यहाँ शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बढ़ती भूमिका पर केंद्रित रहना है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में आकर्षक आरंभ, उपयोगों और चुनौतियों का संक्षिप्त विवेचन तथा सार्थक निष्कर्ष रखा जाता है।

चरण 1: विषय और प्रारूप की योजना उपयुक्त शीर्षक देकर पहले शिक्षा में हो रहे परिवर्तन का संकेत करें। फिर व्यक्तिगत सहायता, कठिन पाठों की व्याख्या और शिक्षकों को मिलने वाले सहयोग को उदाहरण बनाएँ। अंत में स्वतंत्र चिंतन और जिम्मेदार उपयोग का महत्त्व जोड़ें। रचनात्मक लेख में पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर आवश्यक नहीं हैं।

चरण 2: विचारों का संतुलित विकास तकनीक की प्रशंसा तक सीमित रहने के स्थान पर विद्यार्थी के अनुभव को केंद्र में रखें। ए.आई. से उत्तर मिलना और विषय समझना अलग प्रक्रियाएँ हैं; इसलिए सुविधा के साथ जिज्ञासा, तथ्य जाँचने की आदत और शिक्षक के मार्गदर्शन का उल्लेख करें। इससे लेख विषयानुकूल और विचारपूर्ण बनेगा।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **शिक्षा के क्षेत्र में ए.आई. के बढ़ते चरण**

कक्षा की दीवारें अब सीखने की सीमा नहीं रहीं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने विद्यार्थी के लिए ज्ञान के नए दरवाजे खोल दिए हैं। कठिन प्रश्न की सरल व्याख्या, भाषा सीखने का अभ्यास और अपनी गति से पढ़ने की सुविधा अब सहज उपलब्ध है। शिक्षक भी इसकी सहायता से अभ्यास सामग्री बना सकते हैं और बच्चों की कठिनाइयाँ पहचान सकते हैं।

फिर भी हर तैयार उत्तर सच्ची समझ नहीं देता। यदि विद्यार्थी सोचने के बजाय केवल उत्तर उतारने लगे, तो यह सुविधा उसकी रचनात्मकता घटा सकती है। गलत जानकारी और निजी आँकड़ों की सुरक्षा भी चिंता के विषय हैं। इसलिए ए.आई. का उपयोग विवेक और शिक्षक के मार्गदर्शन में होना चाहिए। शिक्षा का उज्ज्वल भविष्य तकनीक और मानवीय संवेदना के संतुलन में है।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख ए.आई. के शैक्षिक उपयोगों, संभावित चुनौतियों और विवेकपूर्ण प्रयोग को जोड़ते हुए लगभग 120 शब्दों में विषय का संतुलित विकास करता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में एक अनुच्छेद सुविधाओं पर और दूसरा विवेकपूर्ण उपयोग पर रखिए; अंतिम वाक्य को शिक्षा के मानवीय उद्देश्य से जोड़िए।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

"परंपरागत विषयों के बजाए नए विषयों पर लिखने का अभ्यास करने से अभिव्यक्ति के मौलिक अधिकार का पूरा लाभ मिलता है।" – कैसे ? स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नए या अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में लेखक अपनी अनुभूतियों और कल्पना के आधार पर विचारों को मौलिक रूप देता है।
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सार अपने विचारों को विवेकपूर्ण ढंग से व्यक्त करना है। प्रश्न में इसका संबंध नए विषयों पर लिखने के अभ्यास से स्पष्ट करना है।

चरण 1: कथन का आशय समझें यहाँ मौलिक अधिकार के कानूनी प्रावधानों की सूची नहीं माँगी गई है। प्रश्न यह जानना चाहता है कि प्रचलित विषयों के तैयार विचारों से आगे बढ़कर लिखने से लेखक को अपनी दृष्टि व्यक्त करने का अवसर कैसे मिलता है। इसलिए उत्तर में स्वतंत्र चिंतन, कल्पना, निजी अनुभव और भाषा के प्रयोग का संबंध स्थापित करना चाहिए।

चरण 2: तर्कों का क्रम निर्धारित करें पहले परिचित विषयों पर निर्भरता का संकेत दें, फिर नए विषयों से मिलने वाली स्वतंत्रता बताएँ। स्वतंत्रता का अर्थ बिना सोचे कुछ भी लिखना नहीं है; विचारों की स्पष्टता और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता भी आवश्यक है। इस अंतर

से उत्तर में संतुलन आता है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर परंपरागत विषयों पर लिखते समय हम प्रायः पहले से प्रचलित विचारों और अभिव्यक्तियों का सहारा लेते हैं। नए विषय हमें स्वतंत्र रूप से सोचने, निजी अनुभवों को परखने और कल्पना का प्रयोग करने का अवसर देते हैं। उनमें किसी तैयार ढाँचे का दबाव कम होता है। लेखक अपनी दृष्टि, संवेदना और भाषा के नए रूप प्रस्तुत कर सकता है। इस अभ्यास से संकोच घटता है और मौलिकता बढ़ती है। इस प्रकार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सार्थक उपयोग होता है, बशर्ते लेखन विवेकपूर्ण और उत्तरदायी हो।

चरण 4: निष्कर्ष नए विषयों का अभ्यास स्वतंत्र चिंतन और मौलिक अभिव्यक्ति को विकसित करता है; इसी कारण लेखक अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिक सार्थक लाभ उठा पाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल स्वतंत्रता की परिभाषा न लिखें; नए विषय से स्वतंत्र चिंतन और फिर मौलिक अभिव्यक्ति तक का संबंध स्पष्ट करें।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :
कहानी के संवादों का नाट्य रूपांतरण करते समय नाटक के संवादों की विशेषताएँ लिखिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाट्य संवाद पात्रों की बातचीत के माध्यम से कथानक को आगे बढ़ाते और उनका चरित्र उजागर करते हैं।
- मंच पर संवाद बोले और सुने जाते हैं; इसलिए उनमें संक्षिप्तता, स्वाभाविकता, स्पष्टता तथा अभिनय की संभावना आवश्यक है।

चरण 1: कहानी और नाटक की अभिव्यक्ति में अंतर समझें कहानी में कथावाचक किसी पात्र के विचार या परिस्थिति का विस्तार से वर्णन कर सकता है। नाट्य रूपांतरण में वही बात पात्रों की बातचीत, क्रियाओं और अभिनय से सामने आती है। इसलिए कहानी के लंबे वर्णन को ज्यों का त्यों संवाद नहीं बनाना चाहिए। संवादों से घटना का विकास हो और पात्रों के आपसी संबंध भी स्पष्ट हों।

चरण 2: संवादों की उपयुक्त भाषा और प्रभाव चुनें हर पात्र की भाषा उसकी आयु, शिक्षा, सामाजिक परिवेश और मनःस्थिति के अनुकूल होनी चाहिए। छोटे, बोलचाल के सहज वाक्य अभिनेता को भाव, विराम तथा स्वर के उतार-चढ़ाव का अवसर देते हैं। अनावश्यक विवरण, एक ही बात की पुनरावृत्ति और लंबे उपदेशात्मक कथन मंचीय प्रभाव घटाते हैं।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय संवाद संक्षिप्त, सहज, स्वाभाविक और बोलने योग्य होने चाहिए। उनकी भाषा पात्रों की आयु, शिक्षा, सामाजिक स्थिति तथा स्वभाव के अनुकूल हो। संवाद कथानक को आगे बढ़ाएँ, पात्रों का चरित्र खोलें और उनके संबंध स्पष्ट करें। उनमें परिस्थिति के अनुसार तनाव, भाव तथा उत्सुकता हो। लंबे वर्णन और अनावश्यक दोहराव से बचना चाहिए। संवादों में अभिनय, विराम और स्वर के उतार-चढ़ाव की गुंजाइश हो, जिससे दर्शक घटना तथा पात्रों की मनःस्थिति को समझ सकें।

चरण 4: निष्कर्ष नाट्य संवादों की प्रमुख विशेषताएँ हैं—संक्षिप्तता, स्वाभाविकता, पात्रानुकूल भाषा, कथानक का विकास और अभिनय की संभावना।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय भाषा, पात्र, कथानक और मंचीय अभिनय—इन चार आधारों पर संवादों की विशेषताएँ व्यवस्थित करें।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :
रेडियो नाटक की अवधि छोटी तथा पात्र संख्या कम क्यों होती है ? कारण सहित स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता कथानक, पात्र और वातावरण को संवादों, ध्वनियों तथा संगीत से समझता है।
- प्रसारण की समय-सीमा और केवल आवाज़ से पात्रों की पहचान करने की आवश्यकता रेडियो नाटक की रचना को प्रभावित करती

हैं।

चरण 1: छोटी अवधि का कारण समझें रेडियो नाटक को प्रसारण के निश्चित समय में प्रस्तुत करना होता है। इसमें दृश्य सामने नहीं होता; श्रोता सुनकर अपने मन में घटनाओं का चित्र बनाता है। बहुत लंबा या फैलाव वाला घटनाक्रम उसकी एकाग्रता और रुचि बनाए रखना कठिन करता है। इसलिए सीमित अवधि में केंद्रित कथानक, प्रभावी संवाद और चुनी हुई घटनाएँ रखी जाती हैं।

चरण 2: कम पात्रों की आवश्यकता स्पष्ट करें रंगमंच पर दर्शक पात्रों को उनके चेहरे, वेशभूषा तथा गतिविधियों से पहचान सकता है। रेडियो में पहचान मुख्यतः आवाज़, बोलने के ढंग और संवाद के संदर्भ से होती है। बहुत अधिक पात्र होने पर उनकी आवाज़ों और संबंधों में भ्रम हो सकता है। सीमित पात्र श्रोता को घटनाक्रम से जुड़े रहने और हर पात्र की भूमिका समझने में सहायता देते हैं।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर रेडियो नाटक केवल सुनकर समझा जाता है; इसमें पात्र और घटनाएँ दिखाई नहीं देते। इसकी अवधि छोटी रखी जाती है, ताकि श्रोता की एकाग्रता और रुचि बनी रहे तथा निर्धारित प्रसारण समय में कथानक प्रभावशाली ढंग से पूरा हो सके। पात्रों की संख्या कम होती है, क्योंकि श्रोता उन्हें मुख्यतः आवाज़ और संवाद से पहचानता है। बहुत से पात्र होने पर आवाज़ों तथा उनके संबंधों में भ्रम हो सकता है। सीमित पात्र और संक्षिप्त कथानक नाटक को स्पष्ट, सुबोध और प्रभावी बनाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष छोटी अवधि श्रोता की एकाग्रता और प्रसारण की समय-सीमा के अनुकूल होती है; कम पात्र आवाज़ से पहचान तथा कथानक की स्पष्टता बनाए रखते हैं।

त्वरित सुझाव: दोनों कारण अलग-अलग लिखें: अवधि को एकाग्रता और प्रसारण समय से, पात्र-संख्या को आवाज़ द्वारा पहचान से जोड़ें।

6(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'रुबाइयाँ' में संतान के प्रति माँ के वात्सल्य की जो झलक दिखाई देती है उसे स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ की रुबाइयों में माँ और बच्चे के घरेलू प्रसंग वात्सल्य को सहज रूप देते हैं।
- काव्यगत भाव को स्पष्ट करने के लिए माँ की क्रियाओं और बच्चे की प्रसन्नता का संबंध देखना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और भाव समझना माँ बच्चे को गोद में लेकर चाँद का टुकड़ा कहती है, उसे उछालकर हँसाती है तथा नहलाकर उसके उलझे बाल सँवारती है। ये क्रियाएँ उसके स्नेह, ममता और देखभाल को मूर्त करती हैं। उत्तर में इन्हीं घरेलू प्रसंगों से वात्सल्य स्पष्ट करना चाहिए। इनमें माँ का प्रेम केवल भावना बनकर नहीं रहता, बल्कि बच्चे के सुख के लिए किए जाने वाले छोटे-छोटे कामों में प्रकट होता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर माँ बच्चे को गोद में लेकर उछालती और हँसाती है। वह उसे नहलाकर बाल सँवारती तथा कपड़े पहनाती है। बच्चे की चाँद पाने की ज़िद भी दर्पण में उसका प्रतिबिंब दिखाकर पूरी करती है। इन क्रियाओं में मातृ-वात्सल्य झलकता है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ का वात्सल्य बच्चे की देखभाल, उसके साथ खेलने तथा उसकी इच्छाएँ प्यार से पूरी करने में व्यक्त हुआ है।

त्वरित सुझाव: वात्सल्य स्पष्ट करते समय सामान्य प्रशंसा के साथ रुबाइयों की दो ठोस मातृ-क्रियाएँ अवश्य जोड़ें।

6(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
आकाश में काली सिल पर लाल केसर के मलने के भाव को 'उषा' कविता के आधार पर अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता उषा भोर के बदलते आकाश को घरेलू वस्तुओं के बिंबों से मूर्त करती है।
- काली सिल और लाल केसर के रंगों का मेल अँधेरे आकाश में उभरती लालिमा का चित्र है।

चरण 1: बिंब का अर्थ समझना काली सिल आकाश के शेष अँधेरे का तथा उस पर मला गया लाल केसर भोर की लालिमा का दृश्य उपस्थित करता है। यह तुलना केवल रंगों का मेल नहीं है; इसमें सूर्योदय से पहले आकाश के धीरे-धीरे बदलने की प्रक्रिया भी दिखाई देती है। कवि ने दूर के विशाल आकाश को घर में परिचित सिल और केसर के माध्यम से निकट और अनुभवगम्य बनाया है। इससे पाठक रंगों की छटा को अपनी आँखों के सामने देख सकता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर भोर के समय आकाश का अँधेरा पूरी तरह मिटा नहीं है। उसी में सूर्य की लालिमा फैलने लगती है। कवि को यह दृश्य ऐसा लगता है मानो किसी ने काली सिल पर लाल केसर मल दिया हो। इससे उषाकाल का सुंदर रंग-बिंब उभरता है।

चरण 3: निष्कर्ष काली सिल पर लाल केसर का बिंब अँधेरे आकाश में उभरती प्रातःकालीन लालिमा को साकार करता है।

त्वरित सुझाव: पहले बिंब की दोनों वस्तुओं का आकाश से संबंध बताइए, फिर उनके संयुक्त रंग-प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

6(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'कवि-कर्म शाश्वत है' – कैसे ? 'छोटा मेरा खेत' कविता के आधार पर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी कविता-रचना को खेती के रूपक में प्रस्तुत करते हैं।
- साहित्य की रसपूर्ण उपज बार-बार ग्रहण करने पर भी समाप्त नहीं होती; यही कवि-कर्म की शाश्वतता है।

चरण 1: खेती के रूपक को समझना कागज़ का पन्ना खेत है, भाव बीज हैं और कल्पना से शब्दों के अंकुर फूटते हैं। रचना में फलित रस पाठकों को आनंद देता है। भौतिक खेत की उपज खाकर समाप्त होती है, जबकि काव्य का रस बार-बार पढ़ने पर भी बना रहता है। यहाँ अनंत काल तक कटाई होने की कल्पना साहित्य की स्थायी सार्थकता बताती है। अलग-अलग समय के पाठक उसी रचना से नया आनंद ग्रहण करते रहते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि की रचना कागज़ के खेत में उगी अमृतमयी फसल है। उसका रस पाठक बार-बार ग्रहण करते हैं, फिर भी वह समाप्त नहीं होता। कविता की उपज लुटते रहने पर बढ़ती है। इसी अक्षय साहित्यिक आनंद के कारण कवि-कर्म शाश्वत है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता की रस-उपज का बार-बार ग्रहण करने पर भी अक्षय बने रहना कवि-कर्म की शाश्वतता सिद्ध करता है।

त्वरित सुझाव: शाश्वतता के उत्तर में साधारण खेत की नश्वर उपज और कविता की अक्षय रस-उपज का अंतर दिखाइए।

7. तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया –
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया –
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल ! [5 अंक]

7(i). पृथ्वी में सोए हुए अंकुरों पर किसका प्रभाव पड़ता है ? [1 अंक]

(A) बादलों के गरजने का
(B) बिजली के कड़कने का
(C) पृथ्वी की आशाओं का
(D) झरनों के गिरने का

सही उत्तर: (A) बादलों के गरजने का

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बादल की गर्जना को जागरण और नवजीवन का प्रेरक बताया गया है।
- प्रश्न का उत्तर उस पंक्ति से तय होता है जिसमें सुप्त अंकुरों के सजग होने का कारण दिया है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पहचानना कवि कहता है कि घन की भेरी-गर्जन से सुप्त अंकुर सजग होते हैं। इसलिए पृथ्वी में सोए अंकुरों पर बादलों की गर्जना का प्रभाव पड़ता है। गर्जना उनके भीतर नवजीवन की आशा जगाती है।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचना (B) बिजली का कड़कना और (D) झरनों का गिरना इस प्रभाव का कारण नहीं बताए गए हैं। (C) पृथ्वी की आशाएँ भी कारण नहीं हैं; आशाएँ तो गर्जना से जागे अंकुरों के भीतर उत्पन्न होती हैं। इसलिए पाठ का सीधा समर्थन केवल (A) को मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है: बादलों के गरजने का।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर पंक्ति में आए 'से' शब्द को खोजिए; यहाँ 'भेरी-गर्जन से' उत्तर बताता है।

7(ii). प्रस्तुत काव्यांश में कवि बादलों के विप्लवकारी रूप का आह्वान क्यों कर रहा है ? [1 अंक]

(A) वातावरण को ठंडक देने के लिए

(B) क्रांति लाने के लिए

(C) वर्षा करने के लिए

(D) बादलों को देखने के लिए

सही उत्तर: (B) क्रांति लाने के लिए

हल:

अवधारणा:

- बादल यहाँ परिवर्तन और क्रांति का प्रतीक है।
- कवि की संबोधन-पंक्ति तथा रण और विप्लव से जुड़े शब्द उसके आह्वान का उद्देश्य स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: काव्यांश का उद्देश्य समझना कवि बादल को विप्लव का बादल कहकर पुकारता है। रण-तरी और भेरी-गर्जन जैसे प्रयोग संघर्ष तथा जागरण का वातावरण बनाते हैं। उसका आह्वान पीड़ित संसार में नवजीवन लाने वाली क्रांति के लिए है।

चरण 2: विकल्पों का अंतर देखना (A) ठंडक देना तथा (C) वर्षा करना बादल के सामान्य प्राकृतिक कार्य हैं, पर प्रश्न उसके विप्लवकारी रूप का उद्देश्य पूछता है। (D) केवल बादलों को देखना संघर्ष और नवजीवन की भावना नहीं समझाता। (B) क्रांति लाना ही इन संकेतों के अनुरूप है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: क्रांति लाने के लिए।

त्वरित सुझाव: 'विप्लव', 'रण' और 'भेरी' जैसे शब्द साथ आएँ तो उत्तर में सामाजिक परिवर्तन और क्रांति की दिशा देखिए।

7(iii). 'सुप्त अंकुर' का प्रयोग किस भावना/प्रक्रिया को प्रकट करता है ? [1 अंक]

(A) आलस्य और निराशा

(B) सोई हुई आशाएँ व संभावनाएँ

(C) बीज के समाप्त होने की प्रक्रिया

(D) अंकुरित बीज के न बढ़ने की प्रक्रिया

सही उत्तर: (B) सोई हुई आशाएँ व संभावनाएँ

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक का अर्थ उसके साथ प्रयुक्त क्रिया और काव्यांश के व्यापक भाव से स्पष्ट होता है।
- सुप्त अंकुरों का सजग होकर नवजीवन की आशा करना छिपी संभावनाओं के जागरण का संकेत है।

चरण 1: प्रतीक को संदर्भ में पढ़ना अंकुरों में जीवन विद्यमान है, लेकिन वे अभी सोए हुए हैं। बादल की गर्जना उन्हें सजग करती है और वे नवजीवन की आशा से सिर उठाते हैं। अतः वे सोई हुई आशाओं और संभावनाओं का प्रतीक हैं।

चरण 2: गलत अर्थ हटाना (A) आलस्य और निराशा में नवजीवन की सकारात्मक दिशा छूट जाती है। (C) बीज की समाप्ति तथा (D) अंकुर के न बढ़ने का अर्थ भी गलत है, क्योंकि अंकुर जाग रहे हैं और सिर उठा रहे हैं। इसलिए (B) ही पूरे संदर्भ को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: सोई हुई आशाएँ व संभावनाएँ।

त्वरित सुझाव: 'सुप्त' को अकेला न पढ़ें; 'सजग' और 'नवजीवन' जोड़ने से सकारात्मक प्रतीकार्थ स्पष्ट होगा।

7(iv). 'प्लावित माया' को किस संदर्भ में प्रयुक्त किया गया है ? [1 अंक]

(A) शोषक वर्ग की धन-संपत्ति के रूप में

(B) जल प्रलय के वर्णन के रूप में

(C) वर्षा के कारण आप्लावित नदी के रूप में

(D) शोषण रूपी अग्नि के रूप में

सही उत्तर: (B) जल प्रलय के वर्णन के रूप में

हल:

अवधारणा:

- प्लावन का अर्थ जल से भर जाना या बाढ़ का फैलना है।
- विप्लव की प्लावित माया में क्रांति की व्यापक, प्रलयकारी शक्ति का जल-प्लावन जैसा रूप उभरता है।

चरण 1: पद का संदर्भ समझना कवि बादल की रण-तरी और निर्दय विप्लव की प्लावित माया का चित्र बनाता है। प्लावित शब्द जल के व्यापक फैलाव और प्रलय का बिंब जगाता है। यहाँ इसी बिंब से क्रांति की सर्वव्यापी शक्ति दिखाई गई है।

चरण 2: विकल्पों को परखना (B) जल प्रलय का वर्णन इस जल-प्लावन वाले बिंब के अनुरूप है। (A) शोषक वर्ग की धन-संपत्ति मानना केवल माया शब्द को अलग करके पढ़ना होगा। (C) किसी विशेष आप्लावित नदी का उल्लेख नहीं है। (D) शोषण की अग्नि का अर्थ प्लावित के जल-संबंधी संकेत से मेल नहीं खाता।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: जल प्रलय के वर्णन के रूप में।

त्वरित सुझाव: किसी संयुक्त पद का अर्थ तय करते समय दोनों शब्द साथ पढ़ें; 'प्लावित' यहाँ जल-प्लावन का संकेत देता है।

7(v). 'घन, भेरी-गर्जन' से कवि ने किसका बोध कराया है ? [1 अंक]

(A) आकाश में बादलों का मधुर संगीत

(B) युद्ध व क्रांति के लिए प्रेरित करने वाली गर्जना

(C) समुद्र की लहरों का संगीत

(D) युद्ध में बजने वाले नगाड़ों की आवाज

सही उत्तर: (B) युद्ध व क्रांति के लिए प्रेरित करने वाली गर्जना

हल:

अवधारणा:

- कविता में बादल विप्लव और परिवर्तन के प्रतीक हैं; उनकी गर्जना सुप्त जीवन और आशाओं को जगाती है।
- भेरी युद्ध में बजने वाला नगाड़ा है; उसका बिंब यहाँ क्रांति की प्रेरक शक्ति व्यक्त करता है।

चरण 1: गर्जना का संदर्भ समझिए कवि बादल को विप्लव का बादल कहता है। उसकी भेरी जैसी गर्जना से पृथ्वी में सोए अंकुर सजग होकर नवजीवन की आशा में सिर उठाते हैं। इसलिए यहाँ ध्वनि का आशय युद्ध और क्रांति के लिए जागरण तथा प्रेरणा है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण कीजिए विकल्प (A) में मधुर संगीत है, जबकि कविता में संघर्ष और जागरण की तीव्रता है। (C) समुद्र की लहरों का संगीत बताता है, जिसका इस पद से संबंध नहीं है। (D) भेरी का केवल शाब्दिक अर्थ बताता है; कवि का प्रतीकात्मक आशय उससे व्यापक है। (B) में वही क्रांतिकारी प्रेरणा व्यक्त हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है : युद्ध व क्रांति के लिए प्रेरित करने वाली गर्जना।

त्वरित सुझाव: प्रतीक वाले प्रश्न में शब्द का केवल शब्दकोशीय अर्थ नहीं, उसके साथ आए विप्लव और जागरण के संकेत देखिए।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"कविता एक खेल है बच्चों के बहाने" – कवि ने ऐसा क्यों कहा है ? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण कविता और बच्चों के खेल में सहजता, कल्पना तथा सीमाओं से मुक्ति का साम्य देखते हैं।
- बच्चों का खेल अपने और पराए का भेद मिटाता है; कविता भी मानवीय संबंधों का व्यापक संसार रचती है।

चरण 1: तुलना का आधार समझिए यहाँ खेल का अर्थ केवल मनोरंजन नहीं है। बच्चे अपनी कल्पना से नया संसार बनाते हैं और दूसरों से सहज संबंध स्थापित करते हैं। कविता भी शब्दों के सहारे ऐसा सृजन करती है, जिसकी पहुँच किसी निश्चित जगह अथवा समूह तक सीमित नहीं रहती। अपने और पराए का भेद मिटना इस तुलना का केंद्रीय बिंदु है। कविता के खेल में रचनाकार के साथ पाठक भी भाग लेता है। शब्द पाठक की कल्पना में नए अर्थ खोलते हैं। जैसे बच्चों की मिलीजुली दुनिया किसी एक घर की नहीं होती, वैसे ही कविता का अनुभव भी किसी एक व्यक्ति की निजी सीमा में बँधा नहीं रहता। इसीलिए तुलना में कल्पना के साथ मानवीय एकता का भाव भी आवश्यक है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि ने कविता को बच्चों के बहाने खेल कहा है क्योंकि बच्चों का खेल सहज, कल्पनाशील और बंधनमुक्त होता है। खेलते समय बच्चे अपने-पराए तथा घरों की सीमाओं का भेद भूलकर सबको एक कर देते हैं। कविता भी भाषा, स्थान और सामाजिक भेदों से ऊपर उठकर मनुष्यों को जोड़ती है। दोनों की रचनात्मकता और आनंद की कोई निश्चित सीमा नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष कविता और बच्चों का खेल अपनी सहजता, असीम कल्पना और मनुष्यों को जोड़ने की शक्ति में समान हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल आनंद का उल्लेख न करें; अपने-पराए का भेद मिटाने और सीमाओं से मुक्त सृजन को भी जोड़ें।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता 'व्यावसायिक दबाव के अंतर्गत एक व्यक्ति की संवेदनशीलता का प्रकटीकरण है।' स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता में व्यावसायिक मीडिया द्वारा मानवीय पीड़ा को दर्शनीय कार्यक्रम बनाने पर व्यंग्य है।
- प्रस्तुतकर्ता की संवेदना का मूल्यांकन उसके व्यवहार से होता है : पीड़ित की गरिमा के स्थान पर करुण दृश्य तैयार करना उसका उद्देश्य बन जाता है।

चरण 1: कथन का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए प्रश्न में आए संवेदनशीलता शब्द को कविता के व्यंग्यात्मक संदर्भ में समझना चाहिए। संचालक स्वयं को मानवीय सरोकारों वाला दिखाता है, पर उसके प्रश्न अपाहिज व्यक्ति की तकलीफ बढ़ाते हैं। वह उसकी आँखों और होंठों पर कैमरा केंद्रित करके दर्शकों को प्रभावित करना चाहता है। कार्यक्रम का दबाव उसकी संवेदना को कृत्रिम और अमानवीय बना देता है। कवि दर्शकों की भूमिका की ओर भी संकेत करता है : दूसरों की पीड़ा को केवल भावुक मनोरंजन की तरह देखना संवेदना नहीं है। सच्ची संवेदना व्यक्ति का सम्मान बचाती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कविता में कार्यक्रम का संचालक व्यावसायिक दबाव के कारण अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को संवेदनात्मक दृश्य में बदलना चाहता है। वह उसे रुलाने के लिए कठोर प्रश्न पूछता और कैमरे से उसके दुख को उभारता है। उसका उद्देश्य सहायता करना नहीं, कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाना है। इस प्रकार मानवीय संवेदना का प्रदर्शन होता है, जबकि वास्तविक व्यवहार संवेदनहीन और शोषणकारी है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता व्यावसायिक दबाव में वास्तविक संवेदना के क्षरण और करुणा के बनावटी प्रदर्शन को उजागर करती है।

त्वरित सुझाव: संचालक के घोषित मानवीय उद्देश्य की तुलना उसके कठोर प्रश्नों और कैमरे के प्रयोग से करके व्यंग्य स्पष्ट करें।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ।" 'कवितावली' की इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास सामाजिक निंदा तथा जातिगत संकीर्णता से अप्रभावित रहकर रामभक्ति में अपना विश्वास व्यक्त करते हैं।
- माँगकर खाना और मस्जिद में सोना सादगी तथा आश्रय के प्रति अनाग्रह का संकेत है; लेन-देन से दूरी सांसारिक स्वार्थों से मुक्ति बताती है।

चरण 1: पंक्ति के संकेत समझिए कवि अपने निर्वाह के लिए वैभव अथवा किसी प्रभावशाली व्यक्ति की कृपा आवश्यक नहीं मानता। भोजन माँगकर मिल सकता है और विश्राम के लिए मस्जिद भी स्वीकार है। इससे धार्मिक स्थान के विषय में उसका अनाग्रह प्रकट होता है। एक लेने और दो देने की चिंता न करना संसार के स्वार्थपूर्ण लेन-देन से स्वतंत्र रहने की घोषणा है। यहाँ मस्जिद का उल्लेख किसी धर्म की निंदा नहीं करता। वह कवि की रूढ़ियों से मुक्ति बताता है। उसकी आत्मिक पहचान भक्ति से बनती है, समाज द्वारा लगाए गए ठप्पों से नहीं।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति में तुलसीदास अपनी सादगी, निर्लिप्तता और स्वाभिमानी जीवन-दृष्टि व्यक्त करते हैं। वे माँगकर भोजन कर लेंगे और मस्जिद में सो रहेंगे; उन्हें सांसारिक प्रतिष्ठा या सुख-सुविधाओं की लालसा नहीं है। किसी से कुछ लेना या किसी को कुछ देना भी उनका उद्देश्य नहीं है। रामभक्ति में लीन कवि सामाजिक निंदा और स्वार्थपूर्ण संबंधों की चिंता से मुक्त रहना चाहता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय सादे निर्वाह, सामाजिक निंदा से निर्भयता और सांसारिक स्वार्थों से मुक्त रामभक्ति है।

त्वरित सुझाव: माँगकर खाने को दैन्य तक सीमित न करें; इसे कवि के स्वाभिमान, अनाग्रह और भक्ति के संदर्भ में समझाएँ।

9(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"बाज़ार एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है।" 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार में खरीदने की क्षमता का संबंध पैसे से है; जाति, धर्म और लिंग से नहीं।
- उत्तर पाठ के प्रसंग पर आधारित है और लेखक के विचारों के कारण तथा परिणाम को स्पष्ट करता है; अंत में प्रश्न की शब्द-सीमा के अनुरूप संक्षिप्त उत्तर दिया गया है।

चरण 1: पाठ का केंद्रीय आशय लेखक बाज़ार के उस व्यवहार की ओर संकेत करते हैं जिसमें ग्राहक की पहचान उसकी जाति या धार्मिक समुदाय से तय नहीं होती। सामान खरीदने के लिए उसके पास पैसा होना आवश्यक है। इसलिए कथन का संबंध क्रय-विक्रय में होने वाले समान व्यवहार से है। इसे सभी व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति समान हो जाने का दावा नहीं समझना चाहिए।

चरण 2: कथन को पाठ से जोड़ें दुकानदार के लिए पैसे वाला प्रत्येक व्यक्ति ग्राहक है। वस्तु बेचते समय वह सामान्यतः यह नहीं देखता कि ग्राहक स्त्री है या पुरुष अथवा किसी विशेष जाति या धर्म का है। इस व्यवहार में सामाजिक भेद पीछे छूटते हैं और बाज़ार एक समान धरातल प्रदान करता है। उत्तर में इसी सीमित अर्थ की सामाजिक समता स्पष्ट करनी है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार में पैसे के आधार पर क्रय-विक्रय होता है। उसके लिए ग्राहक की जाति, धर्म या लिंग महत्त्वपूर्ण नहीं होते। जिसके पास पैसे हैं, वह अपनी आवश्यकता की वस्तु खरीद सकता है। सबको ग्राहक के रूप में समान समझकर बाज़ार सामाजिक भेदभाव को कम करता है। इसी अर्थ में लेखक उसे सामाजिक समता की रचना करने वाला मानते हैं।

त्वरित सुझाव: समता समझाते समय पैसे की भूमिका और जाति-धर्म के भेद का घटता महत्त्व साथ लिखिए।

9(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'पहलवान की ढोलक' कहानी किस प्रकार पुरानी जमीनी व्यवस्था पर नई व्यवस्था के आरोपित हो जाने का प्रतीक है ? स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में राजाश्रय के बदलने से लोककला और लोकजीवन के पुराने आधार टूटते हैं।
- उत्तर पाठ के प्रसंग पर आधारित है; अंत में प्रश्न की शब्द-सीमा के अनुरूप संक्षिप्त उत्तर दिया गया है।

चरण 1: पुरानी व्यवस्था का स्वरूप लुट्टन पहलवान की कुश्ती को पुराने राजा का संरक्षण प्राप्त था। उसकी कला और ढोलक की ध्वनि उस सामाजिक संसार से जुड़ी थीं जिसमें स्थानीय खेल तथा लोककलाएँ प्रतिष्ठा पाते थे। राजा का आश्रय पहलवान की आजीविका का भी आधार था। इसलिए उसके जीवन में होने वाला परिवर्तन केवल एक व्यक्ति की कठिनाई नहीं है।

चरण 2: नई व्यवस्था का प्रभाव पुराने राजा के बाद विलायत से लौटे नए राजकुमार की रुचि कुश्ती के स्थान पर घुड़दौड़ और क्रिकेट जैसे खेलों में होती है। वह पहलवान का संरक्षण समाप्त कर देता है। स्थानीय परंपरा की आवश्यकताओं को समझे बिना नई रुचियाँ थोप दी जाती हैं। लुट्टन गाँव लौटता है; उसकी ढोलक बाद में महामारी के बीच ग्रामीणों को साहस देती है।

चरण 3: निष्कर्ष पुराने राजा के समय लुट्टन की कुश्ती और ढोलक को राजाश्रय प्राप्त था। नए राजकुमार ने घुड़दौड़ और क्रिकेट को महत्त्व देकर पहलवान का आश्रय समाप्त कर दिया। इससे लोककला और उससे जुड़ी आजीविका उपेक्षित हुई। कहानी दिखाती है कि स्थानीय परंपराओं को समझे बिना नई व्यवस्था आरोपित करने से पुरानी सामाजिक-सांस्कृतिक जीवनपद्धति के आधार टूट जाते हैं।

त्वरित सुझाव: व्यवस्था के बदलाव को पुराने राजाश्रय, नए खेलों की रुचि और लुट्टन की उपेक्षा से जोड़िए।

9(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ में आज के उद्योगों में सबसे बड़ी समस्या किसे और क्यों माना गया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अरुचिकर काम में बाध्य रहने से श्रमिक की कार्यक्षमता और उत्पादनशीलता घटती है।
- उत्तर पाठ के प्रसंग पर आधारित है और लेखक के विचारों के कारण तथा परिणाम को स्पष्ट करता है; अंत में प्रश्न की शब्द-सीमा के अनुरूप संक्षिप्त उत्तर दिया गया है।

चरण 1: सबसे बड़ी समस्या पहचानें डॉ. आंबेडकर उद्योगों की समस्या को केवल मशीनों या पूँजी की कमी तक सीमित नहीं करते। वे बताते हैं कि बहुत से लोग अपने निर्धारित काम को अरुचि और विवशता से करते हैं। काम के प्रति उदासीनता, घृणा और उससे बचने की प्रवृत्ति उनकी कार्यक्षमता को कम करती है। प्रश्न में इसी मानवीय समस्या की पहचान अपेक्षित है।

चरण 2: जाति-प्रथा से उसका कारण जोड़ें जाति-प्रथा व्यक्ति को उसकी योग्यता और रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं देती। वंशानुगत व्यवसाय से बँधा व्यक्ति चाहकर भी दूसरा काम नहीं अपना पाता। परिणामतः उसका मन काम में नहीं लगता और वह अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग नहीं कर पाता। लेखक इस स्थिति को औद्योगिक प्रगति के लिए हानिकारक मानते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आज के उद्योगों में सबसे बड़ी समस्या यह है कि अनेक लोग अपने काम को अरुचि और विवशता से करते हैं। काम के प्रति उदासीनता और घृणा से उनकी कार्यक्षमता घटती है। जाति-प्रथा मनुष्य को जन्म से निर्धारित व्यवसाय में बाँधती है और रुचि तथा योग्यता के अनुसार काम चुनने से रोकती है। इससे श्रम की उत्पादकता प्रभावित होती है।

त्वरित सुझाव: समस्या में काम से अरुचि लिखिए और कारण में पेशा चुनने की स्वतंत्रता का अभाव स्पष्ट कीजिए।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'पानी की बुवाई' से जीजी का क्या अभिप्राय था ? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के संदर्भ में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी पानी देने को त्याग और वर्षा की प्राप्ति से जोड़ती हैं।
- उत्तर पाठ के प्रसंग पर आधारित है; अंत में प्रश्न की शब्द-सीमा के अनुरूप संक्षिप्त उत्तर दिया गया है।

चरण 1: खेती के उदाहरण का अर्थ जीजी समझाती हैं कि किसान अधिक फसल पाने के लिए पहले कुछ बीज धरती में डालता है। इसी प्रकार पानी की कमी में भी थोड़ा पानी देना उनके लिए व्यर्थ बहाना नहीं, भविष्य की वर्षा के लिए किया गया त्याग है। उनका तर्क लोकविश्वास और परोपकार की भावना पर आधारित है।

चरण 2: इंदर सेना के प्रसंग से जोड़ें जीजी इंदर सेना पर डाले जाने वाले पानी को इसी बुवाई के रूप में देखती हैं। उनके अनुसार कुछ पानी देने से इंद्र प्रसन्न होकर अधिक पानी बरसाएँगे। उत्तर में पानी देने और वर्षा मिलने के इस संबंध को जीजी की धारणा के रूप में लिखना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी के अनुसार जैसे किसान थोड़े बीज बोकर अधिक अनाज पाता है, वैसे ही इंदर सेना पर थोड़ा पानी डालना पानी की बुवाई है। इस त्याग से इंद्र प्रसन्न होकर वर्षा करेंगे और पानी की कमी दूर होगी।

त्वरित सुझाव: बीज से फसल और थोड़े पानी से वर्षा की तुलना लिखने पर जीजी का आशय स्पष्ट होगा।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'भक्तिन' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि भक्तिन की निष्ठा और सेवा-भाव आज की जीवन-स्थितियों में भी प्रेरणादायक हो सकते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सेवा-भाव का मूल्य निष्ठा, संवेदनशीलता और कठिन समय में साथ निभाने से प्रकट होता है।
- पाठ की घटना को वर्तमान जीवन से जोड़ते समय भक्तिन की लगन तथा स्वाभिमान दोनों का ध्यान रखना चाहिए।

चरण 1: पाठ से आधार भक्तिन लेखिका की सुविधाओं का ध्यान रखती है और उनकी दिनचर्या को अपना उत्तरदायित्व मानती है। वह केवल वेतन पाने के लिए काम करने वाली सेविका नहीं रह जाती; लेखिका के साथ उसका आत्मीय और भरोसे का संबंध बनता है। संकट की आशंका में भी वह उनका साथ छोड़ने को तैयार नहीं होती।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर भक्तिन की निष्ठा और सेवा-भाव आज भी प्रेरक हैं। वह कठिन परिस्थितियों में भी लेखिका का साथ निभाती है और आत्मीयता से उनकी देखभाल करती है। उसका आचरण स्वार्थपूर्ण संबंधों के बीच संवेदनशीलता, कर्तव्यनिष्ठा और सहयोग की सीख देता है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन का समर्पण आज के जीवन में भी आत्मीय सहयोग और उत्तरदायित्व निभाने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले भक्तिन का ठोस आचरण लिखें, फिर उससे मिलने वाली आज की सीख जोड़ें।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर के 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर करती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर क्षमता को केवल जन्म या वंश से निर्धारित नहीं मानते; सामाजिक परिस्थितियाँ भी उसे प्रभावित करती हैं।
- शिक्षा, प्रशिक्षण और स्वयं का प्रयत्न मनुष्य की योग्यता के विकास के महत्त्वपूर्ण आधार हैं।

चरण 1: क्षमता के निर्धारक पहचानना पाठ में मनुष्य की क्षमता के तीन आधार बताए गए हैं: शारीरिक वंश-परंपरा; सामाजिक उत्तराधिकार, जिसमें माता-पिता की देखभाल, शिक्षा और अर्जित ज्ञान आते हैं; तथा मनुष्य का अपना प्रयत्न। इसलिए किसी की वर्तमान क्षमता देखकर उसके लिए अवसर सीमित करना उचित नहीं है। अनुकूल परिस्थितियों से क्षमता का विकास संभव है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर आंबेडकर के अनुसार मनुष्य की क्षमता शारीरिक वंश-परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार और उसके स्वयं के प्रयत्नों पर निर्भर करती है। सामाजिक उत्तराधिकार में माता-पिता की देखभाल, शिक्षा तथा संचित ज्ञान शामिल हैं। अतः क्षमता केवल जन्म का परिणाम नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष मनुष्य की क्षमता के आधार शारीरिक वंश-परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार और स्वयं का प्रयत्न हैं।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में क्षमता के तीनों आधार गिनाएँ और सामाजिक उत्तराधिकार का आशय भी स्पष्ट करें।

---

11. कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे, दुख हो कि सुख, वे अपना भाव-रस उस अनासक्त कृषीवल की भाँति खींच लेते थे जो निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकाल लेता है। कालिदास महान थे, क्योंकि वे अनासक्त रह सके थे। कुछ इसी श्रेणी की अनासक्ति आधुनिक हिंदी कवि सुमित्रानंदन पंत में है। कविवर रवींद्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा – 'राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुंदर क्यों न हो, वह यह नहीं कहता कि हममें आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया। असल गंतव्य स्थान उसे अतिक्रम करने के बाद ही है, यही बताना उसका कर्त्तव्य है।' फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है। वह इशारा है। [5 अंक]

11(i). इस गद्यांश में किस प्रकार की अनासक्ति की बात की गई है ? [1 अंक]

(A) सांसारिक सुखों से दूर रहने की

(B) भाव-रसों को अनासक्त रूप से ग्रहण करने की

(C) दुखद दृश्यों से दूर रहने की

(D) सौंदर्य के बाहरी आवरण से प्रभावित होने की

सही उत्तर: (B) भाव-रसों को अनासक्त रूप से ग्रहण करने की

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश का आशय है; उपमा और संकेत को उनके संदर्भ में समझना चाहिए।
- बाहरी रूप से आगे बढ़कर भीतरी भाव-सौंदर्य ग्रहण करना अंश का केंद्रीय विचार है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत गद्यांश में कालिदास दुख और सुख, दोनों से भाव-रस ग्रहण करते हैं। उनका मन किसी एक अनुभूति में बँधकर नहीं रह जाता। इसलिए अनासक्ति का अर्थ अनुभवों से भागना नहीं, उनसे निर्लिप्त होकर सार ग्रहण करना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) सांसारिक सुखों का त्याग यहाँ विषय नहीं है। (C) दुख से दूर भागना गलत है, क्योंकि कालिदास दुख से भी रस लेते हैं। (D) बाहरी आवरण से प्रभावित होना उस आवरण को भेदने के ठीक विपरीत है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है। अनासक्त होकर भाव-रस ग्रहण करना इस अंश का उपयुक्त आशय है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनते समय गद्यांश की निर्णायक पंक्ति से उसका अर्थ मिलाएँ; केवल समान शब्द देखकर चयन न करें।

11(ii). 'राजोद्यान का सिंहद्वार' का उदाहरण देकर क्या समझाने का प्रयास किया गया है ? [1 अंक]

(A) राजद्वार होने के कारण वह द्वार ही सब कुछ है।

(B) वह द्वार इतना मजबूत है कि आसानी से तोड़ा नहीं जा सकता।

(C) बाह्य सौंदर्य के मोह से बचते हुए आंतरिक सौंदर्य को महत्त्व देना।

(D) अभ्रभेदी होने के कारण द्वार के पार नहीं जाया जा सकता।

सही उत्तर: (C) बाह्य सौंदर्य के मोह से बचते हुए आंतरिक सौंदर्य को महत्त्व देना।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश का आशय है; उपमा और संकेत को उनके संदर्भ में समझना चाहिए।
- बाहरी रूप से आगे बढ़कर भीतरी भाव-सौंदर्य ग्रहण करना अंश का केंद्रीय विचार है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत सिंहद्वार कितना ही सुंदर हो, वह यात्रा का अंतिम स्थान नहीं है। उसका कर्तव्य आगे स्थित गंतव्य का संकेत करना है। इसी प्रकार बाहरी रूप के आकर्षण में रुकने के बजाय उसके भीतर निहित सौंदर्य और सार तक पहुँचना चाहिए।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) द्वार को ही सब कुछ मानता है, जबकि अंश इसे नकारता है। (B) मजबूती और तोड़ने का प्रसंग नहीं है। (D) द्वार के पार जाना असंभव बताता है, जबकि गद्यांश उसे अतिक्रम करने को कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है। बाह्य सौंदर्य के आगे का गंतव्य इस अंश का उपयुक्त आशय है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनते समय गद्यांश की निर्णायक पंक्ति से उसका अर्थ मिलाएँ; केवल समान शब्द देखकर चयन न करें।

11(iii). कालिदास की सौन्दर्य-दृष्टि कैसी थी ? [1 अंक]

(A) स्थूल और बाहरी

(B) सूक्ष्म और संपूर्ण

(C) अतिक्रम और अभ्रभेदी

(D) अशक्त और निर्दलित

सही उत्तर: (B) सूक्ष्म और संपूर्ण

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश का आशय है; उपमा और संकेत को उनके संदर्भ में समझना चाहिए।
- बाहरी रूप से आगे बढ़कर भीतरी भाव-सौंदर्य ग्रहण करना अंश का केंद्रीय विचार है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत निर्णायक कथन है कि कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर भीतर पहुँच सकते थे। वे दुख तथा सुख दोनों का भाव-रस समझते थे। यह दृष्टि भीतर के सूक्ष्म तत्त्व और अनुभव के व्यापक स्वरूप को ग्रहण करती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) स्थूल और बाहरी दृष्टि कथन का उलटा अर्थ देती है। (C) अतिक्रम और अभ्रभेदी सिंहद्वार वाले प्रसंग के शब्द हैं, दृष्टि के गुण नहीं। (D) अशक्त और निर्दलित कालिदास की समझ का वर्णन नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है। कालिदास की सूक्ष्म सौंदर्य-दृष्टि इस अंश का उपयुक्त आशय है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनते समय गद्यांश की निर्णायक पंक्ति से उसका अर्थ मिलाएँ; केवल समान शब्द देखकर चयन न करें।

11(iv). 'फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है' – सिद्धांत से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) वे प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाते हैं।

(B) वे मनुष्य के जीवन से संबंधित हैं।

(C) वे जीवन के असल प्रतीक हैं।

(D) वे स्वयं में अंतिम नहीं होते हैं।

सही उत्तर: (D) वे स्वयं में अंतिम नहीं होते हैं।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश का आशय है; उपमा और संकेत को उनके संदर्भ में समझना चाहिए।
- बाहरी रूप से आगे बढ़कर भीतरी भाव-सौंदर्य ग्रहण करना अंश का केंद्रीय विचार है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत अंश में फूल और पेड़ को किसी अन्य वस्तु की ओर उठी हुई अँगुली तथा इशारा कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि उनका बाहरी अस्तित्व ही अंतिम सत्य या गंतव्य नहीं है। वे अपने से आगे के अर्थ की ओर संकेत करते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) केवल सजावट या प्राकृतिक सुंदरता बढ़ाने तक अर्थ सीमित करता है। (B) जीवन से संबंध की सामान्य बात है, अंतिम न होने का आशय नहीं। (C) उन्हें असल प्रतीक कहता है, पर कथन का सीधा आशय (D) अधिक स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है। प्रकृति के संकेत का अर्थ इस अंश का उपयुक्त आशय है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनते समय गद्यांश की निर्णायक पंक्ति से उसका अर्थ मिलाएँ; केवल समान शब्द देखकर चयन न करें।

11(v). गद्यांश के संदर्भ में 'निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकालने से' क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) सूखे हुए गन्ने से भी रस प्राप्त करना।

(B) सामान्य वस्तु में भी सौंदर्य देखना।

(C) असंभव को भी संभव बनाना।

(D) वस्तु/व्यक्ति के भीतरी भाव-सौंदर्य को पहचानना।

सही उत्तर: (D) वस्तु/व्यक्ति के भीतरी भाव-सौंदर्य को पहचानना।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश का आशय है; उपमा और संकेत को उनके संदर्भ में समझना चाहिए।
- बाहरी रूप से आगे बढ़कर भीतरी भाव-सौंदर्य ग्रहण करना अंश का केंद्रीय विचार है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत कृषीवल द्वारा ईक्षुदंड से रस निकालने की उपमा कालिदास की भाव-रस ग्रहण करने की शक्ति के लिए है। जैसे किसान गन्ने के भीतर का रस ग्रहण करता है, वैसे ही कवि बाहरी आवरण के भीतर स्थित भाव-सौंदर्य को पहचान लेता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) गन्ने को सूखा मानकर उपमा का शाब्दिक अर्थ लेता है। (B) सामान्य वस्तु का सौंदर्य व्यापक बात है, पर भीतर के भाव-रस का आशय स्पष्ट नहीं करता। (C) असंभव को संभव करना यहाँ अभिप्रेत नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है। भीतरी भाव-सौंदर्य की पहचान इस अंश का उपयुक्त आशय है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनते समय गद्यांश की निर्णायक पंक्ति से उसका अर्थ मिलाएँ; केवल समान शब्द देखकर चयन न करें।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

नए युग के वे कौन-से मानक थे जिनसे यशोधर बाबू की असहमति थी और क्यों ? नए युग के उन मानकों की वर्तमान संदर्भों में प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू के परंपरागत जीवन-मूल्यों और नई पीढ़ी की बदलती जीवन-दृष्टि के बीच तनाव उभरता है।
- उत्तर में नई पीढ़ी के मानक, उनसे असहमति के कारण और वर्तमान में उनकी उपयोगिता का संतुलित विवेचन आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और असहमति का आधार समझिए यशोधर बाबू का व्यक्तित्व किशनदा की सादगी, आत्मानुशासन और सामुदायिक जीवन से प्रभावित है। दूसरी ओर उनके बच्चों के लिए आर्थिक सफलता, आधुनिक सुविधाएँ, निजी निर्णय और उत्सव मनाने के नए ढंग महत्त्वपूर्ण हैं। शादी की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आयोजन इसी पीढ़ीगत अंतर को सामने लाता है। उत्तर में केवल आधुनिक वस्तुओं की सूची देना पर्याप्त नहीं है; यह बताना चाहिए कि यशोधर बाबू को उनके पीछे संबंधों में घटती आत्मीयता और प्रदर्शन की बढ़ती प्रवृत्ति क्यों दिखाई देती है।

चरण 2: वर्तमान प्रासंगिकता के लिए उत्तर की रूपरेखा बनाइए पहले बदलते रहन-सहन, उपभोक्ता सुविधाओं और आर्थिक उपलब्धि का उल्लेख कीजिए। फिर यशोधर बाबू के संस्कारों से उनका टकराव स्पष्ट कीजिए। अंत में स्वतंत्रता और सुविधा के सकारात्मक पक्ष स्वीकार करते हुए दिखावे तथा बुजुर्गों की उपेक्षा पर विचार रखिए। ऐसा मूल्यांकन कहानी के तनाव को एकतरफा निर्णय में बदलने से बचाता है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर नए युग में आर्थिक सफलता, आधुनिक रहन-सहन, सुविधाओं का उपभोग, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पाश्चात्य ढंग से उत्सव मनाना प्रतिष्ठा के मानक थे। यशोधर बाबू को विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का प्रदर्शनपूर्ण आयोजन और बच्चों की नई जीवनशैली सहज नहीं लगती थी। किशनदा से मिले सादगी, अपनत्व और परंपरा के संस्कार उनकी असहमति के आधार थे। उन्हें संबंधों में उपयोगितावाद और बुजुर्गों की उपेक्षा खटकती थी। आज स्वतंत्र निर्णय, बेहतर सुविधाएँ और उपलब्धियों का उत्सव प्रासंगिक हैं, लेकिन उपभोग को ही सफलता मानना उचित नहीं। आधुनिकता तभी सार्थक है जब उसमें पारिवारिक संवेदना, बुजुर्गों का सम्मान और सादगी के लिए भी स्थान हो।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर बाबू और नई पीढ़ी का संघर्ष बदलते सामाजिक मूल्यों का संघर्ष है; वर्तमान में आधुनिक सुविधाओं और मानवीय संवेदना के बीच संतुलन आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: लगभग 100 शब्दों के उत्तर में मानक, असहमति के कारण और वर्तमान प्रासंगिकता—इन तीनों बिंदुओं को अवश्य स्थान दें।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

"पाठशाला जाने के लिए मन तड़पता था लेकिन दादा के सामने खड़े होकर, यह कहने की हिम्मत नहीं होती थी।" 'जूझ' पाठ के लेखक द्वारा कहे इस कथन के पीछे के कारणों को स्पष्ट करते हुए यह भी लिखिए कि पढ़ने हेतु लेखक के समक्ष क्या-क्या चुनौतियाँ थीं ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव का आत्मकथात्मक पाठ 'जूझ' शिक्षा के लिए बालक के संघर्ष, कठोर पारिवारिक परिस्थितियों और सीखने की प्रबल इच्छा को व्यक्त करता है।
- उद्धृत कथन में पढ़ने की आकांक्षा और पिता के भय का द्वंद्व है। कारणों तथा पढ़ाई की व्यावहारिक बाधाओं को अलग-अलग पहचानना चाहिए।

चरण 1: दादा के सामने बोल न पाने का कारण समझिए पाठ में दादा लेखक के पिता हैं। वे लेखक को खेती के काम में लगाए रखना चाहते थे और उसकी पढ़ाई का समर्थन नहीं करते थे। उनके क्रोध तथा कठोर व्यवहार का डर बालक को अपनी इच्छा व्यक्त करने से

रोकता था। इसलिए विद्यालय के लिए तड़प केवल पढ़ाई पसंद होने का संकेत नहीं, अपने जीवन की दिशा बदलने की तीव्र आकांक्षा भी है। पिता के विरोध का उल्लेख करते हुए उन्हें लेखक का बड़ा भाई समझ लेना इस प्रसंग का गलत अर्थ होगा।

चरण 2: चुनौतियों को क्रम से रखिए उत्तर में पहले पिता की असहमति और भय, फिर खेती तथा पशुओं की देखभाल का बोझ बताइए। विद्यालय जाने के लिए सहमति मिलने के बाद भी श्रम से मुक्ति नहीं मिलती थी। पढ़ाई और खेत के काम का तालमेल, विद्यालय पहुँचने की कठिनाई और अभ्यास के लिए समय जुटाना प्रमुख बाधाएँ थीं। लेखक की लगन इन चुनौतियों का सामना करने में सहायक बनी। इसी क्रम में उत्तर देने से उद्धरण का कारण और प्रश्न का दूसरा भाग दोनों स्पष्ट हो जाते हैं।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर लेखक के पिता, जिन्हें दादा कहा गया है, पढ़ाई के विरोधी थे और उसे खेती में लगाए रखना चाहते थे। उनके कठोर स्वभाव, क्रोध और पिटाई के भय से लेखक विद्यालय जाने की इच्छा कहने का साहस नहीं कर पाता था। पढ़कर जीवन सँवारने की आकांक्षा उसे भीतर से व्याकुल करती थी। पढ़ाई के मार्ग में पिता की अनुमति, खेत का काम, पशुओं की देखभाल और समय का अभाव बड़ी बाधाएँ थीं। अनुमति मिलने पर भी उसे खेती की जिम्मेदारियाँ निभाकर विद्यालय जाना पड़ता था। थकान और नियमित अध्ययन की कठिनाई के बावजूद उसकी लगन तथा शिक्षकों के प्रोत्साहन ने उसे आगे बढ़ाया।

चरण 4: निष्कर्ष यह कथन शिक्षा की तीव्र इच्छा और पिता के भय के बीच फँसे बालक की स्थिति बताता है। उसका संघर्ष अनुमति प्राप्त करने के बाद भी श्रम और पढ़ाई को साथ निभाने में जारी रहा।

त्वरित सुझाव: 'दादा' का अर्थ यहाँ पिता है; उत्तर में उनके विरोध के साथ खेत के काम और पढ़ाई के लिए समय की कठिनाई भी लिखें।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

नगर-नियोजन और वास्तुकला के किन साक्ष्यों के आधार पर कहा जाता है कि 'मुअनजोदड़ो की सभ्यता एक सुसंस्कृत समाज की सभ्यता थी' ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत 'अतीत में दबे पाँव' में मुअनजोदड़ो के अवशेष तत्कालीन नगरवासियों की विकसित जीवन-दृष्टि का प्रमाण हैं।
- सुसंस्कृत समाज की पहचान केवल भव्य इमारतें नहीं, बल्कि नागरिक सुविधाओं, स्वच्छता और सामुदायिक जीवन की सुविचारित व्यवस्था भी है।

चरण 1: नगर-नियोजन के साक्ष्य पहचानना नगर की सड़कें और गलियाँ व्यवस्थित ढंग से बनी थीं। जल-निकासी की ढकी हुई नालियाँ, कुएँ और घरों के स्नानघर बताते हैं कि स्वच्छता तथा पानी की उपलब्धता पर ध्यान दिया जाता था। इन सुविधाओं का संबंध सामान्य नागरिकों के दैनिक जीवन से था। इसलिए उत्तर में केवल निर्माण की सुंदरता नहीं, उसके सामाजिक उपयोग को भी स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 2: वास्तुकला को सांस्कृतिक दृष्टि से जोड़ना पकी ईंटों के मकान, आँगन, स्नानघर तथा विशाल सार्वजनिक स्नानागार निर्माण-कौशल के उदाहरण हैं। स्नानागार की जलरोधी व्यवस्था और पानी निकालने का प्रबंध तकनीकी समझ दिखाते हैं। लेखक के वर्णन में राजसी वैभव के प्रदर्शन की अपेक्षा नागरिक व्यवस्था का स्वर अधिक प्रमुख है। इन्हीं ठोस अवशेषों को सुसंस्कृत सामुदायिक जीवन के निष्कर्ष से जोड़कर लगभग 100 शब्दों का उत्तर बनाया जा सकता है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर मुअनजोदड़ो का सुव्यवस्थित नगर-नियोजन उसके सुसंस्कृत समाज का प्रमाण है। सीधी सड़कें, नियोजित गलियाँ, पकी ईंटों के मकान, आँगन और स्नानघर विकसित वास्तुकला दिखाते हैं। घरों से जुड़ी ढकी नालियाँ स्वच्छता और जल-निकासी के प्रति सजगता बताती हैं। कुओं की व्यवस्था नागरिकों की आवश्यकताओं का ध्यान रखने का साक्ष्य है। विशाल सार्वजनिक स्नानागार की जलरोधी बनावट और पानी निकालने का प्रबंध उन्नत तकनीकी ज्ञान प्रकट करता है। यहाँ राजसी वैभव के प्रदर्शन से अधिक नागरिक सुविधाओं और सामुदायिक जीवन को महत्त्व मिला था। इसीलिए लेखक इसे सुसंस्कृत समाज की सभ्यता मानता है।

चरण 4: निष्कर्ष सुविचारित आवास, स्वच्छता, जल-व्यवस्था और सार्वजनिक स्नानागार के साक्ष्य बताते हैं कि मुअनजोदड़ो की सभ्यता

नागरिक जीवन के प्रति सजग और सुसंस्कृत थी।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक स्थापत्य साक्ष्य के साथ उसका सामाजिक अर्थ जोड़ें; जैसे ढकी नालियाँ स्वच्छता का और सार्वजनिक स्नानागार सामुदायिक जीवन का प्रमाण है।